अध्याय 2

गांधीजी की लंदन यात्रा

समुद्र की लहराती लहरों पर उछलता-कूदता जहाज आगे की ओर बढ़ रहा था, पर मोहन का मन पीछे की ओर भाग रहा था। माँ की भींगी आँखें और पत्नी का मौन रुदन उसे बहुत व्याकुल बना रहा था। प्यारा घर, प्यारा देश दूर होता जा रहा था।

जहाज में उनके परिचित राजकोट के वकील मजुमदार थे। शेष यात्री अंग्रेज़ थे, जिनसे मिलने और बात करने में गांधी सकुचाते थे। उन्होंने लिखा है, 'मैं स्टुअर्ट (भोजन परोसने वाले) से बोलते हुए झेंपता था; क्योंकि मेरी अंग्रेजी कमज़ोर थी, साथ ही मैं अंग्रेजी रीति-रिवाज से भी परिचित नहीं था।' गांधी यह नहीं समझ पाते थे कि स्टुअर्ट से कैसे पूछें कि भोजन के पदार्थों में कौन-सी चीज़ें बिना मांस की हैं। छुरी-काँटे से खाने का अभ्यास न होने के कारण वे भोजन की टेबल पर कभी नहीं गए, अपने केबिन में ही खा लेते थे।

गांधी प्रातः जल्दी उठते और आठ बजे तक स्नानादि से निपट जाते थे। भोजन का समय होने पर वे घर से लाई हुई चीज़ों से अपनी भूख बुझा लेते थे। यात्री दोपहर का समय मनोरंजन में बिताते थे। गांधी कभी-कभी पियानो बजाकर अपना मन बहला लेते थे। उनके साथी मजुमदार तो जहाज के यात्रियों से खूब हिलमिल गए थे, पर गांधी संकोच के कारण अपने केबिन में ही लेटे रहते थे। मजुमदार बार-बार उनसे कहते, 'वकील को बातूनी होना चाहिए। तुम यात्रियों से मिला-जुला करो, उनसे बातें किया करो। अंग्रेजी में यदि भूल हो भी जाए तो उसकी चिन्ता नहीं करना चाहिए। वह हमारी मातृभाषा नहीं है। इसलिए उसे बोलने का अभ्यास बढ़ाकर ही सीखा जा सकता है।' मजुमदार के उपदेशों का गांधी पर बहुत प्रभाव नहीं पड़ा। उनका संकोच नहीं टूटा। परंतु गांधी को यात्रा में आनंद आ रहा था। रात को वे डेक (जहाज की छत) पर चले जाते थे, क्योंकि रात का दृश्य उन्हें बहुत भाता था। नीचे नीला पानी, ऊपर टिमटिमाते तारों भरा नीला आकाश, समुद्र की लहरों पर चन्द्रमा का नर्तन, युवक गांधी को भाव-विभोर बना देता था।

पाँच दिन की यात्रा के बाद जहाज लंदन पहुँचा, तब पृथ्वी के दर्शन के लिए लालायित यात्री प्रफुल्लित हो उठे। धरती का प्राणी धरती से बहुत दूर रहकर सुखी नहीं रह सकता।

लाल सागर में जहाज पहुँचा तो गर्मी की तपन से यात्री बेचैन होने लगे। उन्हें चैन तभी मिलती, जब वे डेक पर जाते थे। ठंडी हवा उनमें स्फूर्ति भर देती।

स्वेज नहर में जब जहाज ने प्रवेश किया, तब जहाज के आगे की बिजली का प्रकाश चाँदनी-जैसा सुन्दर लगता था। सँकरी नहर में जहाज इतनी धीमी गति से चल रहा था कि उसका भान भी नहीं होता था। इसके छोर पर पोर्ट सईद बंदरगाह था, जहाँ जहाज रुका। माल्टा जिब्राल्टर होता हुआ जहाज प्लेमाउथ पहुँचा। अब शीत का

ज़ोर बढ़ने लगा। जहाज के एक यात्री ने गांधी से थोड़ी-सी घनिष्ठता बढ़ाते हुए सलाह दी- 'मित्र, तुम्हें मांस खाना चाहिए, क्योंकि शीत-प्रधान देशों में बिना मांस खाए मनुष्य स्वस्थ नहीं रह सकता।' गांधी ने कहा- 'मैंने तो सुना है, इंग्लैण्ड में बहुत-से शाकाहारी हैं।'

यात्री ने कहा- 'झूठ है, मेरे परिचितों में तो कोई भी ऐसा नहीं है, जो माँसाहारी नहीं है, तुम चाहो तो शराब न पियो, पर मांस तो तुम्हें खाना ही चाहिए।'

गांधी ने अपनी अंग्रेजी सहयात्री को धन्यवाद देते हुए कहा, 'मैं माँ से मांस न खाने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हूँ। यदि मैं देखूँगा कि बिना मांस खाए इंग्लैण्ड में नहीं रह सकता, तो स्वदेश लौट जाऊँगा।'

चित्र 2. लंदन में विद्यार्थी गांधी

लंदन में गांधी

जहाज साउथ-हेम्पटन बंदरगाह पर ठहर गया। गांधी जहाज में तो काला सूट पहनते थे, परंतु उतरते समय उन्होंने सफ़ेद फलालेन के वस्त्र पहन लिए। इस श्वेत पोशाक में केवल वे ही दिखलाई दे रहे थे, जो असामयिक लगती थी। उनके पास डॉक्टर प्राणजीवन मेहता, दलपतराम, रणजीत सिंह और दादाभाई नौरोजी के नाम के परिचय-पत्र थे। जहाज से उतरकर वे अपने सहयात्री मजुमदार के साथ विक्टोरिया होटल में ठहर गए। डॉक्टर मेहता को उनके आने की सूचना मिल गई थी। अत: वे होटल में आकर उनसे मिले और उन्हें अंग्रेजी शिष्टाचार की शिक्षा दी। उन्होंने समझाया, अंग्रेजों से धीरे-धीरे बातें करना चाहिए। उन्हें भारत की प्रथा के अनुसार 'सर' नहीं कहना चाहिए, क्योंकि इंग्लैण्ड में नौकर अपने मालिक को 'सर' कहता है। उन्होंने गांधी को होटल त्याग किसी परिवार के साथ रहने की सलाह दी, क्योंकि होटल का खर्च बहुत भारी होता है।

डॉ. मेहता की सलाह से गांधी ने दो कमरे किराए पर ले लिए और उनमें रहने लगे। रहने की समस्या तो हल हो गई, पर मन नहीं लग रहा था। दिन तो किसी प्रकार कट जाता, पर रात रोते-रोते बीतती। नींद नहीं आती थी। आती थी माँ की याद और घर की एक-एक बात। अपनी इस अवस्था का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है- 'मेरी गति साँप-छछून्दर जैसी हो गई। मुझे यहाँ अच्छा नहीं लग रहा था, लेकिन मैं घर भी नहीं लौट सकता था। भगवान, तीन वर्ष कैसे बिताऊँगा, इसी चिन्ता में डूबा रहता था।' अंत में मन को दृढ़ कर लंदन में रहने का निश्चय कर लिया।

डॉ. मेहता पुनः गांधी से मिलने आए और उन्हें अंग्रेजी शिष्टाचार और भाषा का सहज ज्ञान कराने की दृष्टि से एक एंग्लो इंडियन परिवार के साथ रहने के लिए ले गए। इस परिवार में रहने पर भी उनकी भोजन की समस्या हल नहीं हुई। नमक, मिर्च मसाले-रहित सब्जी उनके गले से नीचे नहीं उतरती थी। घर की मालकिन सबेरे जलपान के लिए जई (जौ) का दलिया बनाती थी। उससे उनका पेट तो भर जाता था, पर तृप्ति नहीं होती थी। दोपहर और संध्या को मन का भोजन न मिलने से उन्हें भूखा ही रहना पड़ता था। उनके भारतीय मित्र मांस, मदिरा और सिगरेट का निस्संकोच सेवन करते थे। वे गांधी को मदिरा, सिगरेट आदि के लिए आग्रह तो न करते पर मांस खाने का प्रायः रोज ही आग्रह करते, क्योंकि उनका विश्वास था कि शीत-प्रधान देश में मनुष्य बिना मांसाहार के स्वस्थ नहीं रह सकता। गांधी के पास इन सब शुभ चिन्तकों को शांत करने के लिए एक ही उत्तर था- 'माँ के सामने मांस न खाने की प्रतिज्ञा करके आया हूँ, उसे किसी भी दशा में नहीं तोड़ सकता।' मित्र हार जाते पर उनकी दृढ़ता की बराबर प्रशंसा करते रहते।

गांधी अनुकूल शाकाहारी भोजनालय की खोज में प्रयत्नशील रहते थे। एक दिन उन्हें फ़ैरिंगटन स्ट्रीट के शाकाहारी भोजनालय का पता लगा। उन्हें वहाँ अपनी रुचि का भोजन मिल गया। वहीं उन्हें शाकाहार के पक्ष का समर्थन करने वाली पुस्तक भी मिल गई। अभी तक तो वे माँ को दिए गए वचन-पालन की दृष्टि से मांसाहार से कतराते थे, पर अब तो शाकाहार के पक्ष में तर्कपूर्ण प्रमाण प्राप्त हो गया। उन्हें विश्वास हो गया कि मांस-भोजन अप्राकृतिक, पाशविक और अनैतिक है। उन्होंने शाकाहार पर अंग्रेज लेखकों की कई पुस्तकें पढ़ीं, जिनसे शाकाहार के पक्ष में उनका विश्वास दृढ़ हो गया और वे आजीवन उसका प्रचार करते रहे।

अनुकूल भोजन की समस्या तो हल हो गई। अब दूसरी समस्या थी अपने को इंग्लैंड की सभ्यता के अनुकूल ढालने की। धीरे-धीरे वे शिक्षित अंग्रेज़ों की भाँति अपना रहन-सहन बनाने लगे। सर्वप्रथम वेशभूषा में परिवर्तन ले आए। रेशमी टॉप हैट खरीदा, बढ़िया कोट सिलवाया, सोने की डबल वाच चेन ली, पेटेंट लेदर शू (अच्छे चमड़े के जूते) ले आए। मूँछ बढ़ा ली और सिर के बाल बाईं ओर सँवारने लगे। टाई बाँधने की कला भी सीख ली। भारत में हजामत बनाने के दिन ही आईने में मुख देखते थे, पर यहाँ तो टाई ठीक करने में रोज़ आईने का काम पड़ने लगा। अंग्रेज़ी फ़ैशन में रंगने की धुन सवार होने के कारण वे रह-रहकर दर्पण में अपना मुख देखते। यह जानने के लिए कि बाल ठीक तरह सँवरे हैं या नहीं, टाई की गाँठ ठीक लगी है या नहीं। इसका परिणाम यह हुआ कि पोशाक पहनने में ही गांधी का बहुत समय व्यतीत होने लगा। सभ्य समाज में जाने पर बालों में हाथ फेरकर उन्हें ठीक करना भी वे न भूलते थे।

अंग्रेज़ बनने के लिए आधुनिक वेशभूषा ही पर्याप्त न थी, अंग्रेज़ी समाज में नृत्य-संगीत का ज्ञान भी आवश्यक समझा जाता है। इसलिए उन्होंने नृत्य की शिक्षा लेने का प्रयत्न किया। परंतु उसमें उन्हें विशेष सफलता नहीं मिली। संगीतज्ञ बनने के लिए वायलिन बजाना भी सीखा। इंग्लैंड के सभ्य समाज से सम्पर्क बढ़ाने के लिए फ्रेंच भाषा का ज्ञान आवश्यक था। गांधी ने इसे भी सीखने की कोशिश की।

गांधी अंग्रेज़ी बोलने का अभ्यास करते जाते थे, परंतु धारा-प्रवाह भाषण देने की क्षमता नहीं प्राप्त कर सके थे। इसकी शिक्षा लेने के लिए उन्होंने एक गुरु की शरण ली। उसे एक गिन्नी की दक्षिणा भी दी। उसकी सलाह से

उन्होंने बेल द्वारा लिखित पुस्तक खरीदी।

गांधी के मन में पुनः संघर्ष हुआ। इस प्रसंग को उन्होंने विनोद की भाषा में लिखा है- 'बेल साहब ने मेरे कान में बेल (घंटी) बजाई- अरे, तुझे इंग्लैंड में क्या ज़िन्दगी बितानी है? लच्छेदार भाषण देकर क्या करेगा, नाच-गाकर कैसे सभ्य बनेगा? तुझे तो विद्या-धन संग्रह करना चाहिए।' बेल ने गांधी के कान खड़े कर दिए। उन्होंने कानून का ज्ञान प्राप्त करने में अपना मन लगाना प्रारम्भ कर दिया।

बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लैंड में ग्रे, लिंकन, मिडिल टेंपर और इनर टेंपल नाम की चार शालाएँ थीं। इनमें किसी एक में नाम लिखाना होता था। गांधी ने इनर टेंपल में प्रवेश लिया। प्रवेश लेने के उपरान्त वे दो बैरिस्टरों के समर्थन पर इस 'सम्मानीय संस्था' के सदस्य बने।

एक बार उनके एक घनिष्ठ मित्र ने उन्हें इंग्लैंड की सभ्यता से परिचित कराने की दृष्टि से थिएटर में ले जाने का प्रस्ताव किया। दिन निश्चित हो गया। थिएटर में जाने से पूर्व एक शानदार होटल में भोजन करने गए। ज्यों ही भोजन परोसने वाला भोजन की प्लेट लेकर आया त्यों ही गांधी ने पूछा कि उनमें कोई पदार्थ मांस का तो नहीं है। इस प्रश्न पर मित्र झल्ला उठा- 'मोहन, यहाँ ऐसे सवाल नहीं चलेंगे। या तो चुपचाप जो सामने आए खाओ या बाहर चले जाओ।' गांधी चुपचाप बाहर चले गए। बाहर शीत बरस रही थी, बेचारा सिद्धान्तवादी युवक काँपता, ठिठुरत, भूखा खड़ा रहा। मित्र भोजन कर बाहर निकला और गांधी पूर्व निश्चय के अनुसार उसके साथ थिएटर गए। दोनों पास-पास बैठे, पर दोनों एक-दूसरे से एक शब्द भी नहीं बोले। गांधी की सहनशीलता का यह एक उदाहरण है।

गांधी तड़क-भड़क की ज़िन्दगी से विरक्त होने लगे, अपने खर्च में कटौती करने लगे। पाई-पाई का हिसाब रखने लगे। यही कारण है कि सार्वजनिक जीवन में प्रविष्ट होने पर उन्होंने अर्थ-व्यवस्था पर सदैव ध्यान रखा। खर्च कम करने की दृष्टि से अब उन्होंने एंगलो इंडियन परिवार से विदा ली और एक छोटा-सा कमरा किराए पर ले लिया। यह कमरा काम के स्थान से दूर न था। उन्होंने बस से आना-जाना त्यागकर पैदल चलने का अभ्यास बढ़ाया। इससे बस का किराया बचने लगा। हाथ से भोजना बनाना प्रारम्भ कर दिया। इससे होटल का खर्च बचने लगा। दस-पन्द्रह किलोमीटर पैदल चलने के कारण उनका स्वास्थ्य सुधरने लगा। सात्विक भोजन करने और सन्तुलित जीवन बिताने के कारण वे इंग्लैंड में कभी बीमार नहीं पड़े। खर्च में कमी करने का कारण यह भी था कि वे अपने बड़े भाई पर आर्थिक बोझ नहीं लादना चाहते थे। सादगी को उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

प्राकृतिक चिकित्सा की ओर रुझान बढ़ाने से उन्होंने अपने को अन्नाहार तक ही सीमित नहीं रखा, शाकाहारी संस्था के वे सदस्य बन चुके थे। उनके नियमों के अनुसार उन्होंने मिर्च-मसाले, मिठाई, चाय, काफ़ी आदि का सेवन छोड़ दिया। उन्होंने यह अनुभव किया कि स्वाद जीभ से नहीं, मन से बनता है। इसलिए मन पर नियंत्रण रखना आवश्यक है।

भोजन का प्रश्न हल हो जाने पर गांधी ने अंग्रेज़ी में अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए मैट्रिक की परीक्षा लंदन विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण करने का निश्चय किया। उन्हें उसका पाठ्यक्रम काफी कठिन लगा। सबसे कठिन लेटिन भाषा लगी और उसमें पास होना अनिवार्य था। वे इसी में अनुत्तीर्ण हो गए। दूसरे वर्ष पुनः परीक्षा दी और सब विषयों में सफल हो गए। लेटिन भाषा के अध्ययन से अंग्रेज़ी भाषा पर उनका सरलता से अधिकार हो गया। बाद में गांधी की अंग्रेज़ी

इतनी अधिक परिष्कृत हो गई कि अंग्रेज़ी के विशेषज्ञ भी उनकी सरलता और सुष्ठता पर आज भी मुग्ध हैं।

गांधी के सात्विक जीवन का प्रभाव अंग्रेज़ों पर पड़ने लगा। उनके एक अंग्रेज़ मित्र ने जब उनसे गीता पढ़ाने का आग्रह किया, तो बड़े असमंजस में पड़ गए। उन्होंने मैट्रिक तक संस्कृत पढ़ी तो थी, पर उससे इतना ज्ञान नहीं हो पाया था कि वे किसी को मूल के आधार पर गीता पढ़ा सकते। उन्होंने अनुवाद के सहारे अंग्रेज़ मित्र को गीता का ज्ञान करा दिया।

गीता तो उन्होंने अंग्रेज़ मित्र को पढ़ाई और बाइबिल उससे पढ़ी। ईसाई धर्म के प्रति श्रद्धा तो जमी, पर हिन्दू धर्म के प्रति अश्रद्धा पैदा नहीं हुई। गांधी का अध्ययन-क्रम निरन्तर चलता रहा। कठिन परिश्रम के बाद 10 जून, 1891 को वे बैरिस्टर घोषित हो गए। यह उल्लेखनीय बात है कि विदेश में भी उनके स्वदेश के संस्कार पूर्ववत् बने रहे। इंग्लैंड छोड़ने के पूर्व गांधी अपने ज्ञान तथा चरित्र की उज्ज्वलता की छाप प्रबुद्ध अंग्रेज़ समाज पर छोड़ आए।

लौटते समय जहाज की यात्रा बड़ी सुखद रही। वे जब 'डेक' पर घूमते और समुद्री हवा का आनन्द लेते, तब उनकी सारी चिन्ताएँ तिरोहित हो जातीं। परन्तु जब वे अपने केबिन में रहते, तो उनके सामने निराशा का चित्र खिंचने लगता। वे आत्मनिरीक्षण करते – 'कानून की परीक्षा तो मैंने पास कर ली, परन्तु क्या मैं सचमुच कानून जानता हूँ। भारतीय कानून का ज्ञान तो मुझे ज़रा भी नहीं है। फिर मेरी बैरिस्टरी कैसे चलेगी?' इस प्रकार अपने गुण-दोषों की ओर झाँकने का गांधीजी का आजन्म स्वभाव बना रहा।

जहाज बंबई (मुंबई) की ओर बढ़ रहा था। आकाश में बादल घुमड़ते-फिरते आ रहे थे। जब जहाज बंदरगाह पर लगा, वर्षा हो रही थी। गांधी भींगते हुए उतरे और सामने खड़े बड़े भाई लक्ष्मीदास के चरणों में झुक गए। लक्ष्मीदास उन्हें इंग्लैंड से हाल ही लौटे हुए डॉ. मेहता के घर ले गए। पर मोहन अपनी माँ से मिलने और घर जाने के लिए व्याकुल हो रहे थे। 'माँ कितनी अधीरता से मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी, पूछेगी मोन्या, तूने अपने वचनों का पालन किया है या नहीं, मैं कहूँगा, उन्हें पालने के कारण ही माँ मैं तेरे पास खुशी-खुशी आने की हिम्मत कर सका हूँ' – इन विचारों में डूबते-उतराते उन्होंने भाई से पूछा, 'भाई, माँ कैसी हैं?' भाई चुप रह गए। उनकी आँखें भींग गईं। मोहन ने भाई की आँखों में पानी तो देखा, पर अपनी आँखें सूखी ही रखीं। गीता के पारायण ने उन्हें स्थितप्रज्ञ होना सिखला दिया था। धीरे-धीरे भाई ने कहा- 'तुम्हारी बैरिस्टरी पास होने का समाचार जब मिला, तब माँ मृत्यु शय्या पर थीं। सुनते ही उनकी आँखें चमक उठी थीं। पूछती थीं मोन्या कब आएगा? अगर उसका मुख देख सकती तो शांति से विदा हो जाती। ऐसा लगता है कि मोन्या मुझे नहीं मिलेगा, भगवान मुझे जल्दी बुला रहा है। जब आ जाए तो उसे नासिक ले जाना और शुद्धि-संस्कार के बाद राजकोट के जाति-बंधुओं को भोज देना मत भूलना।'

पढ़ाई में विघ्न होने के भय से भाई ने माँ की मृत्यु का समाचार मोहन को नहीं भेजा था। मोहन को पिता की मृत्यु से भी अधिक दुख माँ की मृत्यु से हुआ।

शतावधानी रायचंद भाई

डॉ. मेहता ने अपने सम्बन्धी रायचंद भाई से मोहनदास का परिचय कराया। रायचंद भाई जवाहरातों का व्यापार करते थे। बड़े चरित्रवान, धर्मनिष्ठ और ग़ज़ब की स्मरण-शक्ति रखते थे। वे एक ही समय में सौ प्रकार की बातें सुनकर दुहरा सकते थे। ऐसे व्यक्ति शतावधानी कहलाते हैं। वे किसी भी भाषा के गद्य-पद्य को सुनकर ज्यों का त्यों सुना सकते थे, साथ ही

शतरंज भी ठीक तरह से खेलते जाते थे और लोगों से बातें भी करते जाते थे। उनकी बुद्धि इतनी जागृत रहती थी कि कहीं कोई गलती नहीं हो पाती थी। कौतुहलवश गांधी ने उनकी परीक्षा लेनी चाही। उन्होंने अंग्रेज़ी के कई पारिभाषिक शब्द, मुहावरे और अन्य यूरोपीय भाषा के शब्द लिखकर सुनाए। सुनने के पश्चात् ही जिस क्रम में वे कहे गए थे, रायचंद भाई ने उसी क्रम से उन्हें दुहरा दिया। कहीं कोई भूल नहीं की। बंबई (मुंबई) में शिक्षित समाज के सामने वे अपनी शतावधानता के चमत्कार दिखा चुके थे। गांधी उनकी शतावधानता से कम, उनके पवित्र धार्मिक आचरण से बहुत अधिक प्रभावित हुए। क्रोध तो उन्हें छू ही नहीं पाया था। असत्य बोलना जानते ही न थे। सदा शांत मुद्रा में रहते, मानो जीवन-मुक्त हों। गांधी उनकी आदर्शवादिता से बहुत अधिक प्रभावित हुए। जब कभी उनका मन आदर्श से डगमगाने लगता, तभी रायचंद भाई की प्रशान्त मूर्ति उनकी आँखों के सामने झूलने लगती और वे सँभल जाते, दृढ़ हो जाते।

अभ्यास

प्रश्न-1 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. गांधी जी के साथ जहाज में राजकोट के वकील.....थे।
2. गांधी जी ने गीता अंग्रेज मित्र को पढ़ाई और .....उससे पढ़ो।

प्रश्न-2 लघुत्तरीय प्रश्न-

1. जहाज में यात्रा करते समय गांधी को रात्रि का समय क्यों अच्छा लगता था?
2. किन-किन प्रमुख बंदरगाहों से होता हुआ जहाज बंबई (मुंबई) से लंदन पहुँचा?
3. लंदन में गांधी ने माँ को दिए वचनों का पालन कैसे किया?
4. अंग्रेज़ी सभ्यता में अपने को ढालने के पश्चात् किस घटना ने गांधी की भावना बदल दी?
5. शतावधानी व्यक्ति कौन कहलाते हैं?
6. गांधी रायचंद भाई के किन गुणों से प्रभावित हुए?
7. 'गांधी की लंदन-यात्रा' शीर्षक झलक से उनके जिन गुणों का परिचय तुम्हें मिला हो, उन्हें लिखो।

अब करने की बारी

1. आपने अभी तक किन-किन साधनों से यात्रा की है? आपको सबसे अच्छी यात्रा किस साधन की लगी? लिखिए।
2. शाकाहार सर्वश्रेष्ठ भोजन है। विषय पर दस पंक्तियाँ लिखिए।
3. आप एक बार में कितने शब्दों को सुनकर उन्हें वैसा ही दोहरा सकते हैं, मित्रों के साथ अभ्यास कीजिए।

❑❑